

# International Multidisciplinary Research Journal

## *Golden Research Thoughts*

Chief Editor  
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher  
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor  
Dr.Rajani Dalvi

Honorary  
Mr.Ashok Yakkaldevi

Golden Research Thoughts Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial board. Readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

### Regional Editor

Dr. T. Manichander

### International Advisory Board

Kamani Perera  
Regional Center For Strategic Studies, Sri Lanka

Mohammad Hailat  
Dept. of Mathematical Sciences,  
University of South Carolina Aiken

Hasan Baktir  
English Language and Literature  
Department, Kayseri

Janaki Sinnasamy  
Librarian, University of Malaya

Abdullah Sabbagh  
Engineering Studies, Sydney

Ghayoor Abbas Chotana  
Dept of Chemistry, Lahore University of  
Management Sciences[PK]

Romona Mihaila  
Spiru Haret University, Romania

Ecaterina Patrascu  
Spiru Haret University, Bucharest

Anna Maria Constantinovici  
AL. I. Cuza University, Romania

Delia Serbescu  
Spiru Haret University, Bucharest,  
Romania

Loredana Bosca  
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pinteau,  
Spiru Haret University, Romania

Anurag Misra  
DBS College, Kanpur

Fabricio Moraes de Almeida  
Federal University of Rondonia, Brazil

Xiaohua Yang  
PhD, USA

Titus PopPhD, Partium Christian  
University, Oradea, Romania

George - Calin SERITAN  
Faculty of Philosophy and Socio-Political  
Sciences Al. I. Cuza University, Iasi

.....More

### Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade  
ASP College Devrukh, Ratnagiri, MS India Ex - VC. Solapur University, Solapur

Iresh Swami

Rajendra Shendge  
Director, B.C.U.D. Solapur University,  
Solapur

R. R. Patil  
Head Geology Department Solapur  
University, Solapur

N.S. Dhaygude  
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

R. R. Yaliker  
Director Management Institute, Solapur

Rama Bhosale  
Prin. and Jt. Director Higher Education,  
Panvel

Narendra Kadu  
Jt. Director Higher Education, Pune

Umesh Rajderkar  
Head Humanities & Social Science  
YCMOU, Nashik

Salve R. N.  
Department of Sociology, Shivaji  
University, Kolhapur

K. M. Bhandarkar  
Praful Patel College of Education, Gondia

S. R. Pandya  
Head Education Dept. Mumbai University,  
Mumbai

Govind P. Shinde  
Bharati Vidyapeeth School of Distance  
Education Center, Navi Mumbai

G. P. Patankar  
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Alka Darshan Shrivastava  
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Chakane Sanjay Dnyaneshwar  
Arts, Science & Commerce College,  
Indapur, Pune

Maj. S. Bakhtiar Choudhary  
Director, Hyderabad AP India.

Rahul Shriram Sudke  
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

Awadhesh Kumar Shirotriya  
Secretary, Play India Play, Meerut (U.P.)

S. Parvathi Devi  
Ph.D.-University of Allahabad

S.KANNAN  
Annamalai University, TN

Sonal Singh,  
Vikram University, Ujjain

Satish Kumar Kalhotra  
Maulana Azad National Urdu University



## माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का अध्ययन

प्रदीप कुमार तिवारी<sup>1</sup>, डॉ. सतीश कुमार सिंह<sup>2</sup>

<sup>1</sup>शोध-छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद।

<sup>2</sup>शोध निर्देशक, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद।

### सारांश:

हमारी भारतीय संस्कृति में कहा जाता है कि अशिक्षित व्यक्ति उस पशु के समान होता है जिसके सींग और पूँछ नहीं होती है। हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति और जीवन की दैनिक गतिविधियों को सफल बनाने में शिक्षा का अहम योगदान होता है। इस प्रकार विद्यार्थियों में भी शारीरिक और बौद्धिक विकास की दृष्टि से शिक्षा की भूमिका सराहनीय होती है। परिवर्तनशील वर्तमान समाज में विद्यार्थियों में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में रुचि के झुकाव का अध्ययन करने के लिए उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित सुल्तानपुर जनपद के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत दसवीं के कुल 300 विद्यार्थी लिए गये हैं जिसमें 150 छात्राएँ एवं 150 छात्र शामिल हैं। शोधकर्ता ने डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ के 'शैक्षिक रुचि प्रपत्र' का प्रयोग करके वर्तमान समय में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों की रुचि के झुकाव का अध्ययन किया और पाया कि वर्तमान समय में विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि क्रमागत रूप से तकनीकी, फाइन आर्ट्स, साइन्स, कॉमर्स, मानविकी तथा ग्रहविज्ञान के क्षेत्र में है। और विद्यार्थियों की सबसे कम शैक्षिक रुचि कृषि के क्षेत्र में पायी गयी, जो कि आने वाले समय के लिए लाभदायक प्रतीत नहीं होता। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि लिंग भेद तथा पर्यावरण के अनुसार विद्यार्थियों की रुचि में भिन्नता पायी जाती है। सीखना ही सीखने की राह दिखाता है, छोड़ दिया जब सीखना सब भूल जाता है।



जन्मजात गुणों से हटकर कुछ करना, बस 'रुचि' से ही सम्भव हो पाता है।।

**मुख्य शब्द:** शैक्षिक रुचि, लिंग भेद, पर्यावरण और रुचि का झुकाव आदि।

### प्रस्तावना –

यह सत्य है कि व्यक्ति में रुचि नाम की कोई प्रवृत्ति होती है और इन रुचियों में व्यक्तिगत भिन्नताएँ भी होती हैं। जिसके कारण ही भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का भिन्न-भिन्न कार्यों के प्रति लगाव होता है। शारीरिक गठन, मानसिक योग्यताओं, स्वभाव, व्यवहार, आचार-विचार, बुद्धि, प्रेरणाओं एवं व्यक्तित्व अभिक्षमताओं की भाँति व्यक्ति की रुचियों भी व्यक्तिगत भिन्नताएँ होती हैं। इसलिए विभिन्न व्यवसायों, विषयों, क्रियाओं, वस्तुओं, तथ्यों आदि के प्रति व्यक्तियों की भिन्न-भिन्न रुचियाँ होती हैं। यदि व्यक्ति किसी कार्य के प्रति रुचिशील होगा तो वह उसे कुशलता पूर्वक कर लेगा। किन्तु इसके विपरीत यदि उसकी उस कार्य में रुचि नहीं होगी तो वह उस कार्य को आसानी से नहीं

कर पायेगा। जब कोई वस्तु हमें अच्छी लगती है या पसन्द आती है तो स्वाभाविक रूप से हमारी रुचि उसके प्रति हो जाती है जिसके फलस्वरूप हम उसकी ओर अपना ध्यान केन्द्रित कर लेते हैं। अर्थात् रुचि से हमारा तात्पर्य किसी तथ्य, वस्तु या प्रतिक्रिया के प्रति ध्यान केन्द्रित करना है। बिंघम (1937) के अनुसार "रुचि वह प्रवृत्ति है जो किसी अनुभव में लग जाती है तथा उसमें निरन्तर होती है।" सुपर (1967) के शब्दों में "रुचि कोई पृथक मनोवैज्ञानिक इकाई नहीं है, बल्कि यह सम्पूर्ण मानव व्यवहार का एक पहलू है।" इस प्रकार रुचि का शाब्दिक अर्थ हुआ किसी कार्य में मन लगाकर कार्य करने की भावना। अर्थात् रुचि वह प्रेरणा शक्ति है जो किसी भी मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरित करती है। रुचि को व्यापक और स्पष्ट रूप में व्यक्त करते हुए गिलफोर्ड (1964) ने कहा है कि "किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया से आकर्षित होने, उसे पसन्द करने या उसमें सन्तुष्टि पाने की ओर ध्यान केन्द्रित करने अतएव यह कहा जा सकता है कि किसी वस्तु, व्यक्ति या प्रक्रिया को पसन्द करने, उसके प्रति ध्यान

केन्द्रित करने तथा उसमें सन्तुष्टि पाने की प्रवृत्ति को ही रुचि कहते हैं। इसका व्यक्ति की योग्यताओं एवं अभिक्षमताओं से कोई सम्बन्ध नहीं होता है। यह जन्मजात एवं अर्जित दोनों ही प्रकार की हो सकती है। आयु के साथ-साथ इसका रूप स्थिर एवं समय के अनुसार परिवर्तनशील होता है।

प्रायः रुचि (Interest), भावना (Feeling), इच्छा (Wish), अभिक्षमता (Aptitude) एवं योग्यता (Ability) एक ही जैसे प्रतीत होते हैं किन्तु इनमें समानता होते हुए भी काफी अन्तर है। रुचि में हम किसी उद्दीपक के प्रति सुख की अनुभूति कर उसके प्रति ध्यान केन्द्रित करते हैं, जबकि भावना किसी उद्दीपक के प्रति सुख-दुख की अनुभूति कहलाती है। इस प्रकार रुचि में केवल सुख और भावना में सुख-दुख दोनों ही अनुभूतियों का मिश्रण होता है। रुचि का सम्बन्ध किसी विशेष चाह से होता है या जिसके प्रति हम सुख की अनुभूति अनुभव करते हैं उसके प्रति हमारी रुचि जागृत होती है किन्तु इच्छा में हम किसी वस्तु के अभाव का अनुभव करते हैं और उसे पाने की चेष्टा करते हैं। अतएव जहाँ रुचि में किसी के प्रति जिज्ञासा प्रकट होती है, वहाँ इच्छा में सदैव अभाव की अनुभूति होती है।

सुपर (1967) का दृष्टिकोण है कि रुचि एवं अभिक्षमता दोनों घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं तथा एक-दूसरे के विकास में सहायक होते हैं। जब हमारी जन्मजात अभिक्षमताओं एवं सामाजिक सुविधाओं में आदान-प्रदान होने लगता है तभी रुचि जागृत होती है। अतएव रुचि के विकास में

अभिक्षमता की उपस्थिति आवश्यक है। इसके विपरीत हम रुचि के अभाव में किसी व्यवसाय की अभिक्षमता की कल्पना नहीं कर सकते। इसी प्रकार रुचि और योग्यता भी एक-दूसरे से अत्यन्त घनिष्ठ रूप से सम्बन्धित हैं। किसी भी प्रक्रिया को सीखने में रुचि और योग्यता का विद्यमान होना नितान्त आवश्यक है। एक विद्यार्थी जिसमें संगीत सीखने की योग्यता है किन्तु इसके प्रति वह रुचिशील नहीं है तो वह कदापि संगीत नहीं सीख सकता और इसके विपरीत बिना योग्यता के रुचि का होना भी व्यर्थ है।

#### शोध अध्ययन का उद्देश्य –

##### इस अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का अध्ययन करना।
2. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रुचि का अध्ययन करना।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि पर लिंग भेद एवं पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन करना।

#### शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ –

##### शोध अध्ययन की परिकल्पनाएँ निम्नलिखित हैं–

1. विभिन्न विषयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
2. छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रुचि में कोई अन्तर नहीं होता है।
3. विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि पर लिंग भेद एवं पर्यावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

#### शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

#### न्यादर्श –

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए यादृच्छिक तकनीकी (Random Sampling) का प्रयोग किया गया है। जिसमें उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद द्वारा संचालित सुल्तानपुर जनपद के सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत् दसवीं के कुल 300 विद्यार्थी लिए गये हैं जो कि शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के हैं। शोध अध्ययन के लिए राजकीय बालिका इण्टर मीडिएट कालेज सुल्तानपुर से 150 छात्राएँ एवं राजकीय इण्टर मीडिएट कालेज सुल्तानपुर से 150 छात्रों का चयन किया गया है।

#### परिसीमाएँ –

##### इस शोध की परिसीमाएँ निम्नलिखित हैं –

1. प्रस्तुत शोध केवल उत्तर प्रदेश के सुल्तानपुर जनपद में ही किया गया है।
2. प्रस्तुत शोध में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के कुल 300 विद्यार्थी शामिल हैं।
3. यह शोध उत्तर प्रदेश शिक्षा परिषद द्वारा संचालित केवल सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों पर ही किया गया है।
4. इस शोध में केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का ही अध्ययन किया गया है।

#### शोध उपकरण –

प्रस्तुत अध्ययन में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि को जानने के लिए डॉ0 एस0 पी0 कुलश्रेष्ठ के 'शैक्षिक रुचि प्रपत्र' का प्रयोग किया गया। और शोधकर्ता ने यह जानने का प्रयास किया है कि वर्तमान समय में शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की रुचि का झुकाव किस क्षेत्र में सर्वाधिक है। डॉ. एस. पी. कुलश्रेष्ठ के 'शैक्षिक रुचि प्रपत्र' के अध्ययन में प्रयोग किये गये मुख्य क्षेत्र निम्नवत् हैं –

- |                               |                         |                            |
|-------------------------------|-------------------------|----------------------------|
| 1. कृषि (Agriculture)         | 2. कॉमर्स (Commerce)    | 3. फाइन आर्ट्स (Fine Arts) |
| 4. गृह विज्ञान (Home Science) | 5. मानविकी (Humanities) | 6. विज्ञान (Science)       |
| 7. तकनीकी (Technology)        |                         |                            |

#### आँकड़ों का संकलन –

स्कूल प्रशासन से अनुमति लेकर 'शैक्षिक रुचि प्रपत्र' को चयनित छात्रों एवं छात्राओं पर प्रशासित किया और विद्यार्थियों द्वारा उत्तर लिख देने के उपरान्त प्रपत्र को वापस संकलित कर लिया। प्रपत्र में दी गई विधि से जाँच कर के अंक प्रदान किया गया। प्रपत्र के अनुसार 0-1 कम रुचि वाले, 2-3 औसत से कम रुचि वाले, 4-5 औसत रुचि वाले, 6-9 औसत से अधिक रुचि वाले और 10-14 अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी उच्च रुचि वाले होते हैं।

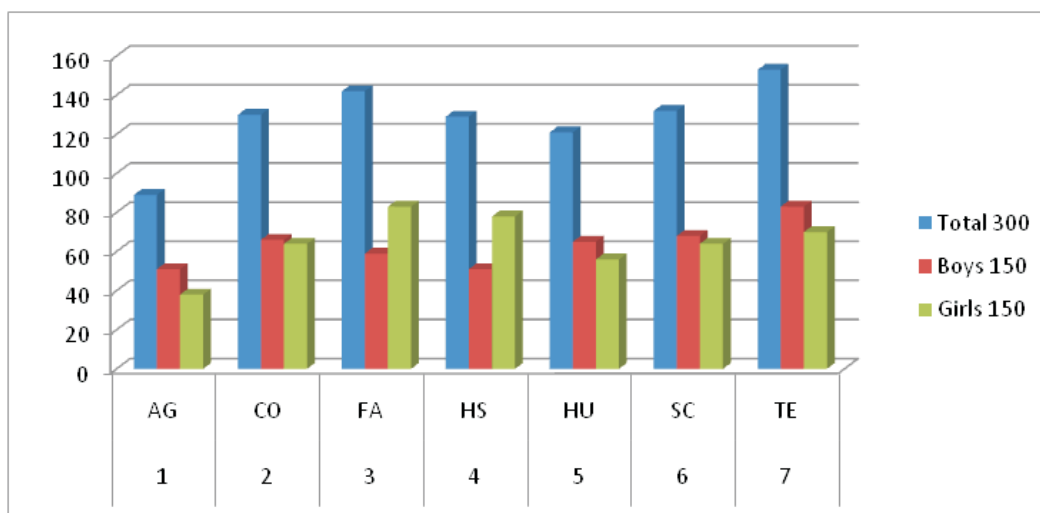
#### आँकड़ों का सारणीय एवं विश्लेषण –

सभी विद्यार्थियों के प्रपत्र को जाँच करके अंक प्रदान किया और उनके प्राप्त अंकों के आधार पर उनकी शैक्षिक रुचि को क्रम से विषयवार सारणीबद्ध किया। छात्र एवं छात्राओं द्वारा अलग अलग प्राप्त अंकों को एवं कुल विद्यार्थियों द्वारा प्राप्त अंकों को विषयवार सारणीबद्ध किया। इस प्रकार प्रत्येक विषय में छात्र एवं छात्राओं और कुल उच्च शैक्षिक रुचि वाले विद्यार्थियों की संख्या निरूपित की गई। आँकड़ों के विश्लेषण से निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए –

**विषयवार छात्र-छात्राओं एवं कुल विद्यार्थियों की संख्या एवं ग्राफ सारणी-1.1**

Sl. No.	Educational Area	Total No. of Students (300)	Boys (150)	Girls (150)
1.	Agriculture (AG)	89 (29.66%)	51 (34%)	38 (25.33%)
2.	Commerce (CO)	130 (43.33%)	66 (44%)	64 (42.66%)
3.	Fine Arts (FA)	142 (47.33%)	59 (39.33%)	83 (55.33%)
4.	Home Science (HS)	129 (43%)	51 (34%)	78 (52%)
5.	Humanities (HU)	121 (40.33%)	65 (43.33%)	56 (37.33%)
6.	Science (SC)	132 (44%)	68 (45.33%)	64 (42.66%)
7.	Technology (TE)	153 (51%)	83 (55.33%)	70 (46.66%)

**सारणी-1.2**

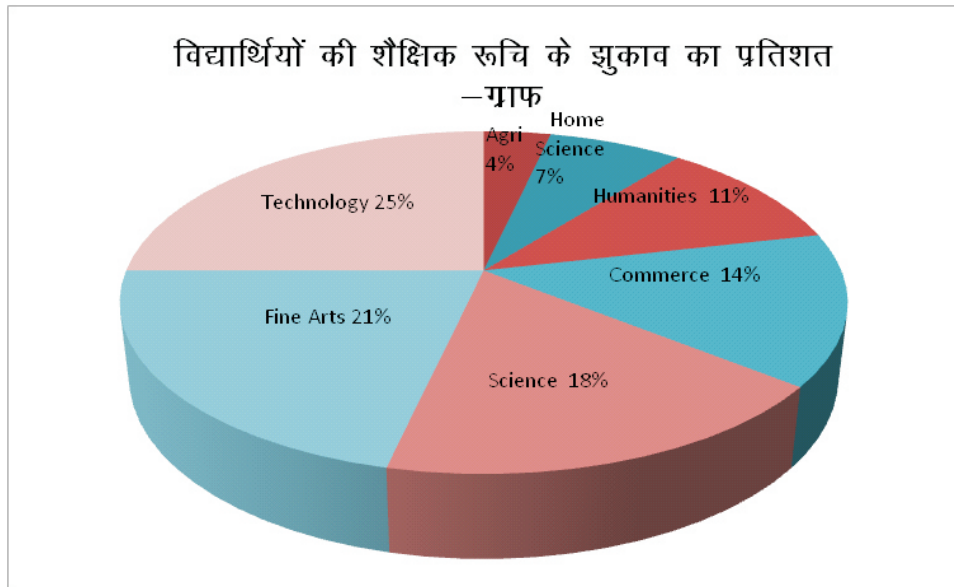


प्रपत्र के नियमानुसार 10-14 अंक उच्च शैक्षिक रुचि को दर्शाता है। इसलिए सारणी 2 में प्राप्त अंकों के आधार पर छात्र, छात्राओं एवं कुल विद्यार्थियों की उच्च शैक्षिक रुचि के झुकाव को विषयवार स्पष्ट किया गया। इस सारणी से यह स्पष्ट होता है कि छात्रों एवं छात्राओं की रुचि के विषय-क्षेत्र अलग-अलग हैं।

**सारणी-2**  
**शैक्षिक रुचि के अनुसार विषय क्षेत्र**

Choice	Total Students	Boys	Girls
I	Technology	Technology	Fine Arts
II	Fine Arts	Science	Home Science
III	Science	Commerce	Technology
IV	Commerce	Humanities	Science
V	Humanities	Fine Arts	Commerce
VI	Home Science	Home Science	Humanities
VII	Agriculture	Agriculture	Agriculture

उच्च शैक्षिक रुचि के छात्रों एवं छात्राओं की संख्या को उनकी कुल संख्या से भाग देकर प्राप्त संख्या में 100 से गुणा करके उनका प्रतिशत निकाल लिया जो निम्न चित्र से स्पष्ट है -



(Technology > Fine Arts > Science > Commerce > Humanities > Home Science > Agriculture)

**शोध परिणाम** – उपर्युक्त आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की रुचि किसी विषय में अधिक और किसी विषय में कम है। अन्य विषय क्षेत्रों की अपेक्षा विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि का झुकाव तकनीकी विषय के क्षेत्र में सबसे अधिक है और कृषि के क्षेत्र में सबसे कम है। अतः “विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि में कोई अन्तर नहीं होता है” परिकल्पना अस्वीकार की जाती है।

छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक रुचि के झुकाव का विषयवार प्रतिशत देखने पर स्पष्ट होता है कि दोनों की शैक्षिक रुचि में अन्तर है। जहाँ 55.33 प्रतिशत छात्र तकनीकी में रुचि रखते हैं वहीं केवल 46.66 प्रतिशत छात्राएँ ही तकनीकी में रुचि रखती हैं। 45.33 प्रतिशत छात्र साइन्स जबकि 42.66 प्रतिशत छात्राएँ ही साइन्स पसन्द करती हैं। इसलिए यह परिकल्पना “छात्र एवं छात्राओं की शैक्षिक रुचि में कोई अन्तर नहीं होता है” अस्वीकार की जाती है।

हमारे समाज में लड़के एवं लड़कियों की कार्य-व्यवस्था अलग-अलग है। समाज में यह धारणाएँ प्रचलित हैं कि कुछ कार्य केवल पुरुष वर्ग एवं कुछ कार्य केवल महिला ही करेंगे। समाज में प्रचलित इन धारणाओं एवं रीति-रिवाजों का प्रभाव उनकी रुचियों पर भी देखने को मिलता है। लड़कियाँ उन विषयों में अधिक रुचि रखती हैं जिनका सम्बन्ध परिवार अथवा नातेदारी व्यवस्था से है। आँकड़ों को देखने से स्पष्ट होता है कि छात्राएँ फाइन आर्ट्स, गृहविज्ञान, तकनीकी, साइन्स, कॉमर्स एवं मानविकी में रुचि रखती हैं और सबसे कम रुचि कृषि में रखती हैं। जबकि छात्र तकनीकी, साइन्स, कॉमर्स, मानविकी, फाइन आर्ट्स, गृहविज्ञान और कृषि में क्रमवार रुचि रखते हैं। अतः यह परिकल्पना “विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि पर लिंग-भेद और पर्यावरण का प्रभाव नहीं पड़ता है” अस्वीकार की जाती है। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि शैक्षिक रुचि पर लिंग-भेद एवं पर्यावरण का गहरा प्रभाव पड़ता है।

#### शोध निष्कर्ष –

प्रस्तुत शोध यह दर्शाता है कि वर्तमान समाज में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में तकनीकी, फाइन आर्ट्स, साइन्स और कॉमर्स में अन्य विषयों की अपेक्षा अधिक रुचि है। सारणी एवं ग्राफ से ज्ञात होता है कि छात्रों एवं छात्राओं की रुचियों में अन्तर है। छात्रों की रुचि तकनीकी, साइन्स, कॉमर्स, मानविकी और फाइन आर्ट्स में अधिक है और छात्राओं की रुचि फाइन आर्ट्स, गृह विज्ञान, तकनीकी, साइन्स, कॉमर्स और मानविकी में अधिक है। परन्तु सभी विद्यार्थियों की सबसे कम रुचि कृषि में है जो कि भविष्य के लिए शुभ संकेत नहीं है।

#### भविष्य निहितार्थ सुझाव –

इस शोध से सम्बन्धित अन्य शोध कार्य के लिए सुझाव निम्न हैं –

1. इस शोध को 300 से कम या अधिक विद्यार्थियों पर किया जा सकता है।
2. यह शोध उत्तर प्रदेश के अन्य जिलों एवं देश के अन्य राज्यों में भी किया जा सकता है।
3. यह शोध अध्ययन निजी स्कूलों और सरकारी स्कूलों पर संयुक्त रूप से अथवा किसी एक पर भी किया जा सकता है।
4. यह शोध प्राथमिक स्तर, माध्यमिक स्तर, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक रुचि को जानने के लिए किया जा सकता है।

#### REFERENCES -

1. Bhargava, Mahesh (2001). Modern Psychological Testing and Measurement Agra, H. P. Bhargava Book House.
2. Crow, L. Donald & Alice V. B. Crow (1948). Educational Psychology, American Book Co. America.
3. Freeman, F. S. (1965). Theory and Practice of Psychological Testing.
4. Ghanderi, A. R., Venkatesh Kumar, and Sampath Kumar (2009). Depression, Anxiety and stress among the Indian and Iranian students. Quoted in Journal of the Indian Academy of Applied Psychology, Vol.35, No.1



5. Guilford, J. P. (1964). General Psychology.
6. Guilford, J.P. and B. Frucher (1973). Fundamental Statistics in Psychology and Education Vth Edition, Tokyo: ML Grow Hill Koga kasha Ltd.
7. Katiyar, P. C. (1982). Values and Vocational Preferences, Baroda; Society for Educational Research and development.
8. Kulshrestha, S. P. (1968). Values and Vocational Interest of Intermediate students, M.Ed. Dissertation, Agra University.
9. Strange (1965). Abnormal Psychology.
10. Super, D. C. (1967). Appraising Vocational Fitness.
11. Super, D. C. (1957). The Psychology of the Careers. New York: Harper and Bros.
12. Townsend, A. A. (1961). Equilibrium Layers and Wall Turbulence, J. Fluid Mech. 11. PP- 97 – 120.
13. Woodworth, R. S. (1918). Dynamic Psychology.
14. www.ericedu.gov.in
15. www.researchineducation.in.
16. www.wikipedia.com



**प्रदीप कुमार तिवारी**

शोध-छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद।

# Publish Research Article

## International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper, Summary of Research Project, Theses, Books and Book Review for publication, you will be pleased to know that our journals are

### Associated and Indexed, India

- ★ International Scientific Journal Consortium
- ★ OPEN J-GATE

### Associated and Indexed, USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Database
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database
- Directory Of Research Journal Indexing

Golden Research Thoughts  
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005, Maharashtra  
Contact-9595359435  
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com  
Website : www.aygrt.isrj.org